Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 9, Issue 3, February 2021
Available online at www.gjms.edwin.co.in

चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में सामाजिक कथ्य–चेतना

डॉ. राजेश कुमार धुर्वे
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
माड़ा जिला, सिंगरौली (म.प्र.)

समकालीन कथा–लेखिका चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में सामाजिक कथ्य–चेतना अपनी संपूर्णता के साथ पाठकों के सामने आती है। वे अपने उपन्यासों में समय का बोध कराते हुए परंपराओं से बंधे होकर भी आने वाले समय की तस्वीर सामने रखते हैं। वैसे तो उनके उपन्यासों में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि सभी पक्षों को प्रस्तुत किया गया है, किन्तु इन सब पर सामाजिक मान्यताएँ अधिक प्रभावी हैं। उनकी कथ्य–चेतना में संस्कृति का निर्माण पारस्परिक सम्बंधों पर आधारित है। वे अपने कथ्य में भावनात्मक आधार पर मानती हैं कि परिवार ही सामाजिक रीति–रिवाजों का नियमन करता है। समय का बदलाव भी डनका कथ्य–चतना के केन्द्र में होता है।

अपने उपन्यास 'कथा–सतीसर' के आधार पर सन् 2005 ई. के व्यास–सम्मान से सम्मानित चन्द्रकान्ता हिन्दी की उन शक्तिसंपन्न लेखिकाओं में से हैं, जिन्होंने आज के भौतिकवादी युग की अंधी दौड़ में बदलते सामाजिक मूल्यों को गहरे से पहचानते हुए जीवन की विसंगतियों, विडम्बनाओं की छटपटाहट को अपने उपन्यास–साहित्य में प्रस्तुत किया। 'ऐलान गली जिन्दा है', 'यहां वितस्ता बहती है', 'अपने–अपने कोणार्क' और 'कथा–सतीसर' जैसे विशेष प्रसिद्ध उपन्यासो की लेखिका का जन्म 1938 ई. में कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर में हुआ। आपने यद्यपि 1967 ई. से हिन्दी कथा–लेखन में अपने पग–चिह्न बनाने शुरू किए और उपन्यास विधा में 1980 में प्रकाशित 'अर्थान्तर' से अपनी पहचान बनानी प्रारंभ की। उसके पश्चात् 'अंतिम साक्ष्य', 'बाकी सब खैरियत है, ''ऐलान गली जिन्दा है, 'यहां वितस्ता बहती है, 'अपने–अपने कोणार्क और 'कथा सतीसर' के माध्यम से उन्होंने अपनी कथा–भूमि कश्मीर और उड़ीसा को केन्द्र में रखते हुए भारतीय समाज को समग्र रूप में अपनी कथ्य–चेतना का आधार बनाया।

उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय सामाजिक की कहानी को केन्द्र में रखते हुए उसकी भौतिक लालसाओं व सामाजिक सरोकारों को प्रस्तुत किया गया है और समूचे जीवन पर दिन–ब–दिन होती जा रही विद्रूप अवस्थाओं के साथ सामाजिक की भावनाओं को अपने अनुभव के क्षेत्र के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इस रूप में उपन्यास विधा उनको अधिक निकट प्रतीत हुई, क्योंकि उपन्यास मानव–जीवन को अपनी समग्रता में अभिव्यक्त करने और समझने के प्रयत्न का एक सशक्त माध्यम है। उपन्यास वास्तविक जीवन की एक काल्पनिक कथा है। मानव–जीवन के चित्र के संबंध में मुंशी प्रेमचन्द जी ने भी कहा था कि मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।

इस तरह उपन्यास जिस चित्र को प्रस्तुत करता है, उसमें रचनाकार के सामसामायिक भावों का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है और उपन्यास की सार्थकता इसी बात में होती है कि उपन्यासकार ईमानदारी से अपने जीवन अनुभवों को शब्दों का ताना–बाना देकर उनका सही–सही विश्लेषण करे और परम्परागत मूल्यों को युगानुरूप नया अर्थ देकर उनकी सामाजिक उपयोगिता से पाठकों को रु–ब–रू करवाए।

चन्द्रकान्ता के उपन्यास अपने समय का बोध परम्पराओं से बंध कर आने वाले कल के लिए भी कुछ दे जाते हैं। चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में यूं तो राजनीतिक, सांतिक, आर्थिक आदि

सभी पहलुओं को उठाया गया है, पर इन सब में सामाजिक मान्यताएँ सर्वाधिक प्रभावी हैं। उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में मध्यवर्गीय लोगों के जीवन को आधार बनाकर उनके रोजमर्रा के जीवन, आकांक्षाओं और संघर्ष को वाणी देने की कोशिश की है। उनके उपन्यास यद्यपि 1980 ई. से कथा–साहित्य में आते हैं, पर उनका कथानक 1931 ई. से कश्मीर की कथा कहता है। उस रूप में उन्होंने अपने सामाजिक चिंतन में इतिहास, इतिहास–प्रसिद्धियों और युग–बोध सभी को लिया है। यह कहा जाता है कि ”साहित्यकार जो कुछ भी रचता है, वह उसकी आँख, मन मस्तिष्क से होकर ही कागज पर आता है। इस रूप में चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में जो सामाजिक संदर्भ हैं, उनमें युग–विशेष की समस्याओं को विशेष रूप से लिया गया है।

इस रूप में उन्होंने समाज के अलग–अलग पक्षों को अपनी कथ्य–चेतना का आधार बनाया और इस दृष्टि से सर्वप्रथम समाज की इकाई परिवार को लिया है। परम्परा से परिवार समाज का प्राथमिक समूह है। यह उन व्यक्तियों का समूह है, जो रक्त या गोद लेने के बंधन से जुड़े होते हैं और एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं। इनके पारस्परिक सम्बन्ध ही सामान्य संसति का निर्माण करते हैं। इस प्रकार अपने सीमित आकार में भावनात्मक आधार पर परिवार ही सामाजिक रीति–रिवाजों का नियमन करता है। यह संयुक्त होता है, पर युगीन परिस्थितियों के कारण वो एकल, परिवार में बंटने लगा है। इस बदलाव को चन्द्रकान्ता ने अपनी कथ्य–चेतना का आधार बनाया है।

इस दृष्टि से परिवार नाम्ना इकाई में आज जो वैमनस्य : तथा कटुता के कारण जो घुटन है, उसका दर्शन ‘बाकी सब . खैरियत है’ में होता है। लेखिका की मान्यता है कि जब दो । संतियों (भारतीय और पाश्चात्य) की टकराहट के कारण जीवन–शैली में द्वन्द्वआता है तो सामाजिक मूल्य बदल जाते हैं। . निम्मी अपनी भाभी पारुल को कहती है –

‘‘सेवा वगैरह तो ठीक है भाभी! लेकिन ये जो हमारे बड़े लोगों की ‘टू मच ऑफ एक्सपेक्टेशंस’ हैं, इन्हें किसी जादू की छड़ी के इस्तेमाल से कोई अलादीन का जिन ही पूरा कर सकता है।’’

‘‘अपने–अपने कोणार्क में भी उन्होंने संयुक्त परिवार में आई टूटन को संकेत कुनी के अन्तर्विरोधी चरित्र के माध्यम से व्यक्त किया है–‘‘नैतिकता का जो रूढ़ अर्थ मेरे जेहन में भरा था उसे बदले बिना मैं सिद्धार्थ को अपना नहीं सकती थी क्योंकि मेरे रूढ़िवादी परविार के मानदंडों पर हमारा रिश्ता खरा नहीं उतरता था।

आज का परिवार परम्परा और आधुनिकता की दृष्टि से दो हिस्सों में बंटा दिखाई देता है। परिवार के बड़े–बुजुर्गों को जहाँ घर की इज्जत प्यारी होती है, वहीं युवा पीढ़ी जिन्दगी को अधिक महत्त्व देती हैं। इस रूप में पारिवारिक रिश्तों में परिवर्तन आ जाता है, जिसे लेखिका ने अपने कथ्य का विषय बनाया है। यह परिवर्तन आज के महानगरीय जीवन में विशेष रूप से उजागर हआ है। ‘ऐलान गली जिन्दा है’ में गली की एक विशेश जीवन–पद्धति, पारस्परिक सौहार्द और भावात्मक सांझेदारी को महानगरीय जीवन स्वीकार नहीं करता। ऐसी दृष्टि में एक तनाव की प्रक्रिया मानसिक यातना बन जाती है

‘‘सुन्दर तो थी बम्बई। रात–दिन सड़कों पर दौड़ता ट्रैफिक, विशाल इमारतें, जो रात को रंग–बिरंगे प्रकाश–पुंज बिखेरते रहते, जिनमें जीवन के तमाम जंजाल जन्म लेते, पनपते और दफन भी हो जाते। लेकिन अवतारे को उनमें जीवन का स्पन्दन महसूस नहीं होता। एक मशीनी व्यस्तता, जिसमें आदमी कल–पुर्जा की तरह जुड़े हुए थे, लौह–मानव की तरह चुस्त–दुरूस्त शायद अनुशासनबद्ध भी।

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 9, Issue 3, February 2021
Available online at www.gjms.edwin.co.in

'यहां वितस्ता बहती है' में लेखिका ने परिवार में आए बदलाव को रेखांकित करने का प्रयास किया है और 'कथा–सतीसर तो उनकी एक ऐसी आपबीती, जग–बीती है, जिसमें उन्होंने सामायिक संसति के विखंडन के कारण पारिवारिक हलचल को उकेरा है। इस संदर्भ में उनकी मान्यता है

"मैने समय और समाज के बदलते परिवेश में व्यवस्था के भिन्न पक्षों के बीच रखकर स्त्री के संघर्षों, अधिकारों, शोषण और विद्रोहों का परीक्षण किया है। मैं महाश्वेता की तरह मानती हूँ कि लेखिकाओं को 'स्त्रीवाद' की बहसों में उलझने की बजाय स्त्री को जमीनी सच्चाइयों के साथ देखना जरूरी है। आज स्त्री लेखन का मुद्दा एक रणक्षेत्र बनता जा रहा है। कुछ बुद्धिजीवी नारीवाद का झंडा उठाते हैं, कुछ स्त्रीवाद शब्द को परिवार के लिए खतरा मानते हैं। दोनों मेरे विचार से गैरजरूरी है।

लेखिका ने अपने उपन्यास–साहित्य में बदलते समय के साथ बदलते संदर्भो के मूल्यों की प्रासंगिकता को भी कई स्थानों पर उठाया है। परिवर्तनधर्मिता के नैरन्तर्य व उसके मार्ग में उठते–उभरते टकरावों और असहमतियों को स्वाभाविकतायुक्त अभिव्यक्ति दी है। संति व संस्कारों को ओढ़ने–बिछाने वाले पात्रों तथा नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले युवाओं के बीच पनपते टकराव, अलगाव तथा असंगति को उजागर किया है। लेखिका ने समाज का ध्यान पुरातनयुगीन–हास की ओर आकर्षित किया है। सच्चा व्यक्ति यथार्थ की सम्पूर्णता के आधार पर सृजन करता है और उसके लेखन में भविष्य अतीत की उपेक्षा अधिक प्रभावोत्पादक एवं मर्मपूर्ण होता है। चन्द्रकान्ता ने अपनी कथाओं में सांतिक हास अथवा नवीन विचारधाराओं के फूटते–बढ़ते पल्लवों को चित्रित किया है। इस दृष्टि से उनके उपन्यासों में सामाजिक मान्यताओं को भी अर्थवत्ता मिली है।

आज के परिवार के विघटन का मूल कारण "जनरेशन गैप' है। एक ओर, जहां संस्कारों से जकड़े लोग हैं, जो अपने आप को समय के साथ नहीं चला पा रहे। 'अन्तिम साक्ष्य' की कैलाश के शब्दों में –

"यह भी हमारे समाज का रोग है मीना। माता–पिता तमाम उम्र अपने बच्चों की खुशियाँ चाहते हैं, पर ऐन वक्त परम्परागत विश्वास और रूढ़ नैतिकताएँ उन्हें जकड़ लेती हैं। वे खुद को आसानी से मुक्त नहीं कर पाते।''

पीढ़ियों के दृष्टिकोण में आए और आ रहे अंतर को लेखिका ने बड़ी सहजता से अपनी कथ्य–चेतना द्वारा प्रस्तुत किया है। मानव–मन की गहरी चितेरी चन्द्रकान्ता जानती है कि जीवन कैसे आगे बढ़ता है? गहरी पड़ताल से जीवन को परखने वाली चन्द्रकान्ता अपने पात्रों के संघर्ष के माध्यम से समाज की बनावट को प्रस्तुत करती हैं। इस संदर्भ में 'अनमेल विवाह एक बहुत बड़ी समस्या है, जिसके कारण समाज में विघटन उपस्थित हो रहा है। इस अनमेल विवाह में दहेज समस्या भी एक कारण है, जिसके प्रति लेखिका समाज को जागरूक करना चाहती है। यहां वितस्ता बहती है' में राजनाथ के माध्यम से उनके विचार स्पष्ट होते हैं

''अपने बेटे की शादी के वक्त भी राजनाथ अपने सिद्धान्तों पर अटल रहे। उन्होंने निहायत सादे ढंग से कमलपत्र पर केसर–कुमकुम, मौली, फूलमाला और एक चांदी का रूपया शगुन के लिए भेजा। कोई गहना, कपड़ा, पैसा कुछ भी नहीं।

दहेज समस्या का सम्बन्ध सामाजिक सन्दर्भो में 'अनमेल विवाह' से बंधा हुआ है। 'अंतिम साक्ष्य' में चन्द्रकान्ता ने इस समस्या को उभारते हुए जिस सामाजिक विडम्बना की ओर संकेत – किया है, उसमें जाति और वर्ण–व्यवस्था भी एक कारण है। प्रायः सामाजिक जीवन में परम्परित

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 9, Issue 3, February 2021
Available online at www.gjms.edwin.co.in

संस्कारों और रीति–रिवाजों से जुड़े व्यक्ति, जाति और उपजाति का प्रश्न सबसे पहले उठाते हैं और । वंश, समाज, जाति और वर्ण के कारण या तो अनमेल विवाह के लिए मजबूर होते हैं, या फिर सामाजिक विडम्बना का शिकार। द्य आज की पीढ़ी इस परम्परा का विरोध करती है। लेखिका 'ऐलान । गली जिन्दा है' की दिव्या के माध्यम से स्पष्ट करती है कि युवा द्य पीढ़ी के मन में आशा है, पर इस जातिगत जंजीर को तोड़ने के ज लिए उसे वक्त का इन्तजार करना पड़ेगा।

पीढ़ियों के अन्तर ने चिंतन के दृष्टिकोण में भी एक अन्तर प्रस्तुत किया हुआ है। आज के समाज में नैतिकता, प्रेम, प्रथाएँ सब कुछ नए अर्थ ग्रहण कर रहे हैं। नैतिकता को तो आज चरित्र और व्यवसाय से तो दूर ही कर दिया गया है। प्रेम का अर्थ ही बदल रहा है। कई बार तो प्रेमी की जगह हमें व्यापारी दिखाई देते हैं, जो हर रिश्ते को व्यापार मानते हैं। इस तरह सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत कुछ आर्थिक भाव भी आ जाते हैं। भूमंडलीकरण के दौर में आज के समाज में पूंजीवादी व्यवस्था अधिक हावी हो चुकी है। बेकारी एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में आज के युवा वर्ग के सामने हैं। युवा–पीढ़ी की मनोव्यथा को लेखिका ने 'ऐलान गली जिन्दा है' में पहचाना है – ''यों बेशुमार रतजगों में घोटमघोट कमरतोड़ पढ़ाई करने के बाद महीना भर की बेकारी उसे बुरी न लगी थी। पर माई बाबू ने उसे बड़ी शिद्दत से महसूस किया था और 'अक्लमंद को इशारा काफी वाली कहावत के मुताबिक अवतारे को भी महसूस कराया था।

इसी दृष्टि से समाज में नव–धनाढ्य वर्ग द्वारा फैलाई गई अव्यवस्था को लेखिका इंगित करती है– ''इधर जब से नव नाढ्य वर्ग उभरकर आने लगा है य दाज–दहेज, भेंट–उपहारों की शक्ल अख्तियार कर भयानक रूप धारण कर गया है। मीठा जहर फैलने लगा है। समाज की रगों में और दुःख यह है कि इस विषकन्या के रूप पर लोग खीझ रहे हैं, इसकी तासीर वह नहीं समझ पा रहे।

यहाँ परोक्ष रूप में लेखिका आज के समाज में प्रचलित रिश्वत का विरोध करती है।

सामाजिक दृष्टि से चन्द्रकान्ता नारी समाज में प्रचलित चूंघट–प्रथा का विरोध करती है। पर्दा आंगिक नहीं मानसिक होना चाहिए, पर समाज दिखावे के लिए जो बूंघट निकालता है, पर चूंघट की आड़ में जो कुछ वो कर गुजरता है, उस अव्यावहारिकता का विरोध करते हुए राजनाथ के शब्दों में लेखिका की भावनाएँ स्पष्ट होती हैं– "उस वक्त शहर में स्त्री–शिक्षा का तेजी से प्रचार होने लगा था, सो लड़कियाँ घर की चार–दीवारी से बाहर खुली सड़कों पर निकलने लगी थी। चूंघट–पर्दा भी पूरानी पीढ़ी तक ही सीमित हो रहा था। कहां वह सिर ढके हब्बा कदल से गुजरती गुड़ी–मुड़ी लड़कियाँ। अब तो खम ठोंककर कंट गों पर दुपट्टे लहराती लड़कियां बीच बाजार गुजरने लगी थी।

चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में कश्मीर की हलचल भरी जिंदगी की भीतरी–बाहरी उथल–पुथल के चित्रण के माध्यम से अपने उपन्यास–साहित्य में समय के उतार–चढ़ाव को जिस प्रकार प्रस्तुत किया है, उससे स्पष्ट होता है कि लेखिका समाज को अच्छी तरह परखते हुए जिस पक्ष को स्पष्ट करना चाहती है, उसमें आज के गतिशील जीवन में मुखौटे ओढ़े समाज की वास्तविकता को जानने का प्रयास अधिक है। लेखिका ने जिन समस्याओं को सामाजिक रूढ़ियों के रूप में बड़ी शिद्दत से महसूस किया है, उन्हीं में नैतिक मूल्यों के हास, भ्रष्टाचार से व्यथित हो कुछ कहने का प्रयास किया है। लेखिका चन्द्रकान्ता बदलते जीवन मूल्यों के बीच व्यक्ति के संबंधों को एक नया अर्थ देने के प्रयास में बहत–कुछ भावों को संजोए हुए प्रत्येक व्यक्ति को अपना सत्य स्वयं खोजने के लिए प्रेरित करती है। उनकी मान्यता है कि अपनी दुर्बलताओं को पहचानने का प्रयास सामाजिक को खुद करना होगा और उनसे सीख लेते हुए

अपने जीवन के काल्पनिक नायक के आदर्शों, विचारों को साकार करने के लिए त–संकल्प होना होगा।

संदर्भ :

1. हिन्दी साहित्य कोश (भाग–1)–पृ. 121.
2. कुछ विचार –पृ. 47.
3. समाजशास्त्र के सिद्धान्त–पृ. 285.
4. बाकी सब खैरियत है – पृ. 17.
5. अपने अपने कोणार्क–पृ. 129.
6. ऐलान गली जिन्दा है–पृ. 166.
7. मेरे भोज–पत्र–पृ.59
8. अन्तिम साक्ष्य –पृ. 38.
9. यहां वितस्ता बहती है –पृ. 48.
10. ऐलान गली जिन्दा है –पृ. 177.
11. वही –पृ. 144.
12. यहाँ वितस्ता बहती है – पृ. 71.
13. वही –पृ. 104